ISSN 2321-1288

RAJHISCO

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS
RHC
ESTD. 1967
RAJHISCO

PROCEEDING VOLUME XXVII

CENTRE FOR RAJASTHAN STUDIES,
UNIVERSITY OF RAJASTHAN, JAIPUR

NOVEMBER - 2014

RAJASTHAN HISTORY CONGRESS
PROCEEDING VOLUME XXVIII

Scanned with CamScanner

Editorial Board takes no responsibility for inaccurate misleading data, opinion and statement appeared in the articles published in this Proceeding. It is the sole responsibility of the contributors. No part of this Proceeding can be reproduced without the written permission of the Secretary, who also holds the copyright © of the 'Proceeding Rajasthan History Congress'.

Published by :
Prof. S.P. Vyas
Secretary, Rajasthan History Congress
Department of History
J.N.V. University, Jodhpur

To be had from :
Sh. P.M. Mohnot
Hony. Treasurer, Rajasthan History Congress
67, Mahaveer Nagar, Pali

ISSN 2321-1288

Price :
Rs. 250/- only

Printed at :
Jangid Computers, Jodhpur

Scanned with CamScanner

14. Thus Speaketh the Stones : Philosophical Underpinnings of Buddhist Architecture in Rajasthan
-Dr. Neekee Chaturvedi ...

15. प्राचीन राजवंश, सूर्यवंश के पौराणिक संदर्भ (वंशावलियों के संदर्भ से)
-डॉ. सूरजमल राव ...

16. आमेर नरेश सवाई जयसिंह के समय की वकील रिपोर्ट
-डॉ. इन्दु आसोपा ...

17. राजस्थान में नाथ योगियों का प्रभाव
-डॉ. रमाकान्त मिश्र ...

18. पूर्व मध्यकालीन राजस्थान में सिंचाई व्यवस्था : एक समीक्षात्मक अध्ययन
-डॉ. राकेश कुमार यादव ...

19. ज्योतिष और तंत्रकला का भारतीय कला इतिहास में योगदान एवं महत्व
-डॉ. सविता शर्मा ...

20. मध्यकालीन राजपुताना एवं मीरां से सम्बन्धित पुरातात्विक स्रोत सामग्री
-डॉ. अरविन्द सिंह तेजावत ...

22. आम्बेर-जयपुर की मंदिर स्थापत्य कला के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक निहितार्थ : श्री गोविन्द देव जी मंदिर
-योगेश कुमार मिश्रा ...

23. राजस्थान की मूर्तिकला में प्रदर्शित सुर-सुन्दरियां
-डॉ. शिखा ...

24. जटवाड़ा-काठेढ प्रांत का भरतपुर जाट राज्य के अभ्युदय की पृष्ठभूमि में सामाजिक विशेष कारणों का अवलोकन
-गौरवदीप करौला ...

25. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा और मूर्तिकला
-मुकेश कुमार शर्मा ...

26. जाट शासक सूरजमल द्वारा सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्य
-देवेन्द्र सिंह सोलंकी एवं पुष्पलता सोलंकी ...

27. खेतड़ी ठिकाणा और स्वामी विवेकानन्द : एक अध्ययन
-नरेन्द्र कुमार सैनी ...

28. राजस्थान में सूफी परम्परा का विकास
-डॉ. शैहला वाजिद ...

29. भील मीणा जाति का इतिहास राजस्थान के संदर्भ में
-गोपाल लाल मीना एवं ज्ञानेश्वर मीना ...

Scanned with CamScanner

* * * * *

खेतड़ी ठिकाणा और स्वामी विवेकानन्द : एक अध्ययन

नरेन्द्र कुमार सैनी

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक काल में अज्ञेयता बनाये विभिन्न नामों से भ्रमण किया करते थे। उनका विवेकानन्द नाम राजस्थान की ही देन है। इससे पहले स्वामीजी अपना परिचय 'विविदिषानन्द' नाम से दिया करते थे। यह सत्य उनके पुराने पत्रों से भी प्रमाणित होता है। यह बात शायद बहुत कम लोग जानते होंगे कि स्वामीजी का सर्वजन विदित विवेकानन्द नाम रखने वाले राजा अजीतसिंह ही थे। एक दिन स्वामीजी के साथ राजा बैठे हुए थे। उन्होंने हसंते-हंसते कहा महाराज आपका नाम बड़ा कठिन है। बिना टीकाकार की सहायता से साधारण लोगों की समझ में उसका मतलब नहीं आ सकता, उच्चारण करना भी सहज नहीं है। इसके अतिरिक्त अब तो आपका विविदिषाकाल (विविदिषा का अर्थ है जानने की इच्छा) भी समाप्त हो चुका है। स्वामीजी ने राजाजी के युक्तियुक्त परामर्श को सुनकर कहा 'आप किस नाम को पसन्द करते हैं? राजा ने कहा, 'मेरी समझ से आपके योग्य नाम है, 'विवेकानन्द'। स्वामीजी ने परमानुरक्त राजा जी की इच्छा के अनुसार उसी दिन से अपना नाम विवेकानन्द रख लिया। यह नाम कितना प्रसिद्ध हुआ। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है। इस घटना से यह जानने में सुगमता होगी कि स्वामीजी का राजा पर कितना प्रेम था और राजा भी उनका कितना प्रेम पूर्ण आदर करते थे।

एक दिन स्वामीजी को एक गूढ़ पुस्तक के एक-एक पृष्ठ को दस बारह सैकण्ड में पढ़ते-उलटते देखकर राजा अजीतसिंह आश्चर्यचकित हुए और उत्सुकता से पूछ बैठे 'स्वामी जी आप इतनी जल्दी कैसे पृष्ठ उलट देते हैं, क्या इतनी जल्दी समूचा पृष्ठ पढ़ लेते हैं।' स्वामी जी ने कहा राजन आपने देखा होगा कि बालक पहले एक-एक अक्षर को ध्यान से देखकर उच्चारण करता है। तत्पश्चात् इन अक्षरों को जोड़-जोड़कर

Scanned with CamScanner